प्रकृति दर्शन

हमारे वन्य पशु

५

शिक्षण मंत्री
महाराष्ट्र सरकार
सचिवालय, बम्बई.

१७ अगस्त १९६१

बॉम्बे नॅचरल् हिस्टरी सोसायटीद्वारा प्रकाशित की जानेवाली 'प्रकृति-दर्शन' मालाकी यह पाँचवी पुस्तिका है। अत्यन्त आकर्षक तथा आबालवृद्धोंको हमेशा मोहित करनेवाला 'वन्य प्राणी-जीवन' इस पुस्तिकाका विषय है। वन्य प्राणियोंके स्वभाव-विशेष तथा उनकी जीवन-पद्धतिके बारमें जानकारी हमें साधारणतया सर्कसों तथा शिकारियोंद्वारा कथित कहानियोंसे प्राप्त होती है। यह पुस्तिका प्रकृतिका अभ्यास करनेवाले शास्त्रज्ञोंके दृष्टिकोणसे लिखी गई है। इसलिये इसमें शास्त्रीय निरीक्षणों और प्रमाणोंपर आधारित विवरण दिया गया है।

इस मालामें प्रकाशित अन्य पुस्तिकाओंकी तरह इस पुस्तिकाका भी सर्वसाधारण रंगरूप और रंगीन चित्रोंका दर्जा ऊँचा रखा गया है। मुझे पूरा विश्वास है, कि यह नई पुस्तिकाभी पाठशालामें पढ़नेवाले बच्चों तथा सर्वसाधारण वाचकोंको प्रिय होगी।

बाळासाहेब देसाई

शिक्षण मंत्री

प्रकृति दर्शन माला, पु. ५

हमारे वन्य पशु

: लेखक :

माधव राऊत

: हिन्दी अनुवाद :

सिबिल बेन्जामिन

बॉम्बे नॅचरल् हिस्टरी सोसायटी

९१, वालकेश्वर रास्ता, बम्बई ६.

१९६२

उत्तरी बंदर उत्तर हिन्दुस्तानका सामान्य बंदर है। यह जंगलोंमें तथा मनुष्यबस्तीमें सर्वत्र पाया जाता है। यह मज़बूत, गठीले शरीर-वाला तथा छोटे क़दका होता है। इसके एक फुट लम्बी दुम होती है। समूचे शरीरकी रोमावलीका रंग चाकलेटी-भूरा किन्तु कमरके आसपास चाकलेटी-नारंगी होता है। रंग भिन्न भिन्न ऋतुओंमें बदलता रहता है। साधारणतया तापी नदीके दक्षिणमें इनका स्थान दक्षिणी बंदरोंने ले लिया है। यह दक्षिणी बंदर आकारमें कुछ छोटा होता है; पर उसकी दुम अधिक लम्बी होती है। यद्यपि हमारे देशमें बंदर अनाजके खेतों, फलके बगीचों तथा शहरोंको बहुत हानि पहुँचाते हैं, फिरभी लोग उनकी हत्या नहीं करते। हर तरहके फल, फ़ूल तथा पेड़-पौधोंके कोमल अंकुर इनका आहार है; इसके अतिरिक्त कीड़े-मकोड़े, गिरगिट, मेंढक आदिकोभी ये खाते हैं। ये सामान्यतया अपना भक्ष्य ज़मीनपरही खोजते हैं। जब धूप तेज़ होती है तब ये पानीमें डुब-कियाँ लगाते हैं।

जंगलोंमें इनके कई शत्रु होते हैं। बाघ या बघेरेकी आकस्मिक गरज़से पेड़ोंपरके बंदर अपना संतुलन खोकर अपने भक्षकके सामने-ही टपक पड़ते हैं। मगर तथा अजगरकाभी वे अक्सर शिकार बन जाते हैं। अपने बचावके लिये इनके प्रमुख साधन हैं - अभ्यस्त तीक्ष्ण दृष्टि, तीखी श्रवणेन्द्रिय, अतिशय सावधानता एवम् शारीरिक चपलता। जंगलोंमें इनके कुटुम्बसमूहमें एक नर, अनेक मादाएँ और बच्चे होते हैं। इनके सालभर बच्चे होतेही रहते हैं। बंदर, लंगूर तथा नरवानर सिर्फ़ येही प्राणी अपनी भावनाएँ भिन्न भिन्न संकेतों, आवाज़ों तथा चेहरेकी भाव-मुद्राओंसे प्रकट कर सकते हैं।

उत्तरी बंदर

सिंह
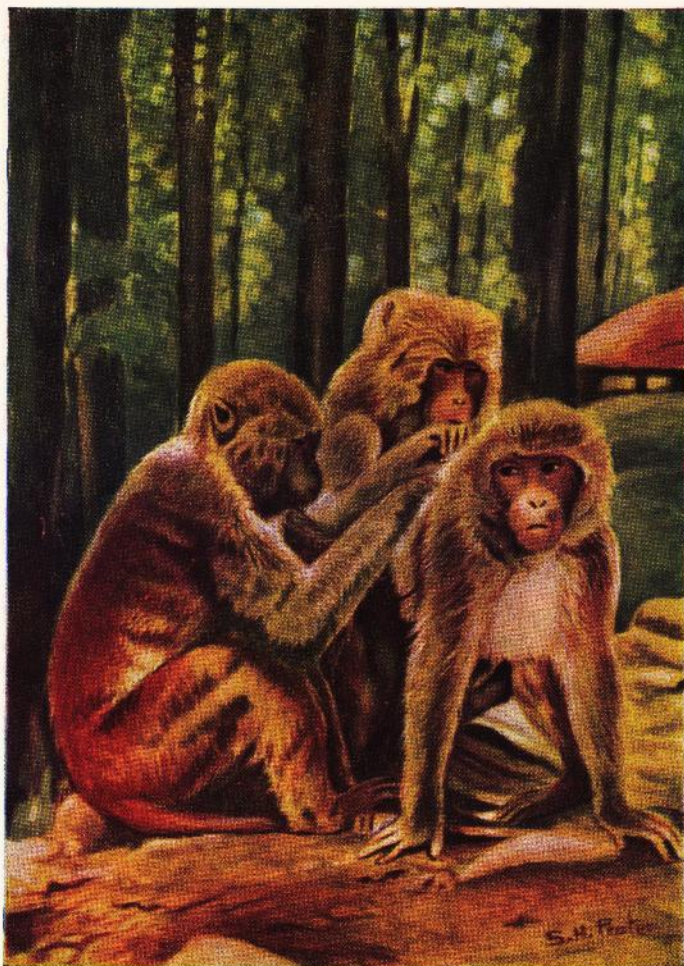
सिंह दुनियाके समस्त मांसभक्षक प्राणियोंमें बहुत भव्य दिखाई देता है और जानवरोंका राजा कहलाता है। हिंदुस्तानमें आजकल तो सिंह केवल सौराष्ट्रके गीरके जंगलोंमेंही पाया जाता है; किन्तु करीबन दो सौ साल पहलेतक वह समूचे उत्तर हिंदुस्तानमें सिंधुसे लेकर गंगा नदीतक और दक्षिणकी ओर नर्मदातक भटकता पाया जाता था। भारतीय सिंह खुले जंगलोंमें रहता है और सूर्यप्रकाशका मुकाबिला कर सकता है। उसका बालूसा-भूरा रंग आसपासके खुले सूखे जंगलके रंगमें इतना घुलमिल जाता है, कि ज़रासे फ़ासले परभी यह आसानीसे दिखाई नहीं दे पाता। बाघसे यह कम धूर्त और लुक छिपकर रहनेवाला है। दिनभर यह पेड़ोंकी छायामें पड़ा आराम करता है और शामको अपने भक्ष्यकी खोजमें निकलता है। प्रायः उस वक्त इसकी ज़ोरदार गरज सुनाई देती है। गीरके जंगलोंमें सरकारने सिंहके शिकारपर निर्बन्ध लगाकर इन्हें पूरा संरक्षण दे रखा है। अभी कुछही वर्ष पहले इनकी संख्या सौसेभी कम थी, किन्तु अब वह फिर बढ़ रही है। वहाँ ये हिरनों तथा जंगली सुअरोंको मारकर खाते हैं, और कभी कभी चरवाहोंके ढोरोंकाभी संहार करते हैं। सिंहकी नज़र तेज़ होती है; फिरभी माना जाता है कि अपने भक्ष्यकी खोजमें इन्हें अपनी गन्धशक्तिही अधिक सहायक होती है। यह बात बिलाव जातिकी सामान्य रीतिके विरुद्ध है। सिंह प्रायः जोड़ेमें या कुटुम्बसमूहमें घूमते रहते हैं। सिंहका पूरा कुटुम्ब जब शिकार करता है, तब सिंह भक्ष्यको घेर लाता है, सिंहनी उसे मारती है और उसकी बगलमें भोजनकी प्रतिक्षा करनेवाले बच्चे भक्ष्यको खानेके लिये उसपर टूट पड़ते हैं।

बाघ चपलता, सामर्थ्य एवम् धूर्तताका एक सर्व-श्रेष्ठ मिलाप है। इसकी हलचलें इतनी सफ़ाईदार होती हैं, कि जंगलोंमें वह मानों अपने आप दरकतासा मालूम पड़ता है। अपने बलवान शरीर, तीक्ष्ण पंजों तथा पैने दाँतोंसे वह बड़े बड़े हिरनों, जंगली सुअरों तथा पालतू मवेशियोंको आसानीसे मार गिरा सकता है। भक्ष्यके निकट पीछेसे छिपे छिपे पहुँचनेपर छलांग मारकर उसकी गर्दन मरोड़कर भक्ष्यको मार गिराना, यही इसका शिकार करनेका साधारण तरीका है। सूर्यास्तके कुछ पहलेही बाघ अपने भक्ष्यकी खोजमें निकल पड़ता है और रातभर इसी काममें लगा रहता है। भयभीत मोरों, बंदरों तथा हिरनोंकी चीख चिल्लाहटसे बाघके अस्तित्वकी तथा उसकी हलचलोंकी सूचना मिलती है। किसी बड़े जानवरका शिकार करनेपर बाघ उसकी पसलियोंतकका पिछला हिस्सा पहली रात खा लेता है, और बचा हुआ हिस्सा खानेके लिये प्राय: दूसरी रात वहाँ जाता है। खोपड़ी, बड़ी हड्डियों, सींग तथा खुरोंको छोड़ शेष सभी भाग वह खा डालता है। उसकी नज़र तथा श्रवणशक्ति बहुत तेज़ होती है और खासकर अपने भक्ष्यकी खोजमें वह इन्हींपर अवलम्बित रहता है। बिलाव जातिके अन्य प्राणियोंकी तरह इसकीभी गन्ध-शक्ति कम होती है। पर्याप्त खुराक़, जल तथा घनी छायावाले जंग-लोंमेंहीं प्राय: बाघ रहते हैं। स्वाभाविक रूपसे बाघ आदमीसे ज़रूर डरता है, फिरभी अपने प्राकृतिक भक्ष्यकी कमी या निर्बल और पंगु बनानेवाले ज़खमके कारण विवश होनेपर वह भयानक मानवभक्षकभी बन जाता है। कई बार मानवभक्षक बाघकी मादाद्वारा पले हुए बच्चोंकोभी मानव भक्षणकी आदत पड़ जाती है।

बाघ

सियार

सियार कुत्तेका बिलकुल निकटका रिश्तेदार है। ग्रामीण देशोंमें रहनेवाले लोगोंने रातके प्रारंभमें तथा पौ फटनेके कुछ पहले इनकी कागारोल सुनी होगी। सियार खासकर निशाचर प्राणी है; किन्तु वह दिनमेंभी घूमता हुआ नज़र आता है। उसके शरीरका रंग काला, चाकलेटी, पीला तथा सफ़ेद इन रंगोंका मिश्रणसा रहता है और भिन्न भिन्न सियारोंके रंगोंमें बहुत फ़र्क़ पाया जाता है। लोककथाओंमें वह एक बड़ा चालाक प्राणी माना जाता है जो अपने फ़ायदेके लिये जंगली मुरग़ीसे लेकर बाघतक सभी प्राणियोंके साथ संबंध रखता है। लोकविश्वास है कि वह बाघसे मित्रता रखकर उसे शिकारके पास पहुँचाता है। सियार प्रायः अकेले या जोड़ेमें घुमते हैं। किन्तु जंगलोंमें उनके छोटे छोटे झुण्डभी कभी कभी दिखाई देते हैं। वहाँ वे छोटे हिरनोंको मारते हैं। लोमड़ीभी सियार जैसीही दिखाई देती है, पर वह आकारमें कुछ छोटी, अधिक सुंदर और भूरे रंगकी होती है।

सदाहरे जंगलोंके प्रदेशोंसे लेकर रेगिस्तानतक हमारे देशभरमें सियार सर्वत्र पाये जाते हैं। सामान्यतया वे छोटे शहरों, ग्रामों तथा खेतीबाड़ीके इर्दगिर्द रहते हैं। इन जगहोंपर वे मलमूत्र तथा मरे हुए जानवरोंको खाते हैं और इस प्रकार सफ़ाईका उपयोगी काम करते हैं। इसके अतिरिक्त वे फल और ख़ासकर बेरभी खाते हैं। इन्हें गन्ना और तरबूज़ विशेष भाते हैं। इसी तरह वे गिरगिट तथा कीटपतंगभी निगलते हैं। इनके सालभर बच्चे होते रहते हैं। मादाके साथ घूमने फिरने लायक बड़े होनेतक बच्चोंको माँ-बाप ज़मीनपर गढ़ोंमें छिपा रखते हैं।

हमारे वन्य पशुओंको संरक्षणकी ज़रूरत है

हमारे वन्य पशुओंको संरक्षणकी ज़रूरत है; यह बात कई लोगोंको कुछ विचित्रसी लगती है। वे कहते हैं, कि ये प्राणी सदियोंसे - बल्कि युगोंसे बग़ैर संरक्षणके जी रहे हैं; तो फिर अब इनके लिए संरक्षणकी आवश्यकता क्यों हुई? पर यह सत्य है। अब हमारे देशके प्राणियोंके लिए संरक्षणकी पहलेसे कहीं अधिक आवश्यकता है। इसके कई कारणभी हैं। उनमेंसे एक - जैसे जैसे जनसंख्या बढ़ती जाती है वैसे वैसे जंगलोंको काटकर ज़्यादा ज़मीन खेतीबाड़ीके काममें लाई जाती है और फलतः उस विभागके वन्य पशुओंका विनाश किया जाता है। दूसरा - शक्तिशाली बन्दूकों, जीप मोटर गाड़ियों, और आँखोंको चौंधिया देनेवाली तेज़ रोशनीवाले दीपकों जैसे साधन अब मनुष्योंको प्राप्त हुए हैं, जिनका उपयोग कुछ लोगोंने बड़े पैमानेपर प्राणियोंका विनाश करनेमें किया। गत २०-२५ वर्षोंमें फ़सलोंकी रक्षा करनेके लिये कई लोगोंने बन्दूकें इस्तेमाल करनेके लिये परवाने हासिल किये हैं। किन्तु इन बन्दूकोंका उपयोग ग़ैरक़ानूनी तौरपर आसपासके प्रदेशोंमें हिरन, ख़रगोश, आदि प्राणी मारकर खानेके लिये या उन्हें बेचकर आर्थिक लाभ उठानेके लिये किया जाता है। फ़सलको नुक-सान पहुँचानेवाले प्राणीभी बन्दूकका उपयोग किये बिना भगाये जा सकते हैं।

अरण्यके समग्र जीवनमें वन्य प्राणी जो महत्वपूर्ण कार्य करते हैं उसकी कल्पना बहुतही कम लोग कर पाते हैं। वास्तवमें अरण्योंका प्राणि-जीवन तथा वनस्पति-जीवन परस्परसे गुंथा है। यदि कुछ विशिष्ट प्राणियोंकी हत्या की जाये या कुछ वृक्षों या वनस्पतियोंका विनाश

किया जाये, तो उससे अरण्योंका प्राकृतिक सन्तुलन इतना बिगड़ जायगा कि समूचे जंगलपर उसका परिणाम होगा। यह बात अब निःसंदिग्ध रूपसे प्रमाणित हो चुकी है, कि जंगलोंका अच्छा असर उसके आसपासके प्रदेशोंमें नियमित रूपसे वर्षा होनेमें होता है। हमारे देशकी खेती ख़ासकर वर्षापरही अवलम्बित है। कुछ अन्य बातेंभी ध्यान देने योग्य हैं। प्राणिमात्रोंका प्रकृतिमें कुछ न कुछ काम अवश्य होता है; और जीनेका जितना हमें अधिकार है उतनाही उन्हेंभी है। सुंदर चमड़ा या रुचिकर मांसके लोभसे इन वन्य पशुपक्षियोंकी हत्या करनेका अधिकार हमें नहीं है।

भारतीय चीता बिलाव वर्गका एक सुंदर प्राणी है। इसकेद्वारा आदमीपर हमला होनेकी बात कभी सुननेमें नहीं आई है। यह प्राणी आसानीसे पाला जा सकता है। एक मिनटमें एक मीलसेभी तेज़ गतिसे कुछ दूरीतक दौड़नेवाला दुनियामें सबसे अधिक गतिमान यह प्राणी है। ऐतिहासिक कालसेही इसे आखेट करना सिखाया जाता था। हिन्दुस्तानमें इसकी हत्या कर उसे नष्ट कर दिया गया है, और वन्य स्थितिमें अब वह पाया नहीं जाता।

हिंदुस्तानके कई राज्योंमें वन्य पशु-पक्षियोंका संरक्षण करनेवाले क़ानून बने हैं। किन्तु परवाना प्राप्त करके उचित सीमातक पशु-पक्षियोंका शिकार करनेपर रोकथाम नहीं लगाई गई है। इसका पता लग चुका है कि केवल क़ानून बनाना पर्याप्त नहीं है। क़ानूनका परिणामकारी उपयोग हो सके इसलिये आबालवृद्ध सभीके सहयोगकी आवश्यकता है।

भारतीय चीता

सामान्य ख़रगोश और काली गरदनवाला ख़रगोश देखनेमें प्रायः एकसेही होते हैं। दोनोंके शरीर पीले-चाकलेटी होते हैं। पहलेके मुँह तथा पीठपर बहुतसा काला रंग मिला हुआसा होता है। यह ख़रगोश हिमालयसे लेकर दक्षिणमें गोदावरीतक पाया जाता है। काली गरदनवाला ख़रगोश आकारमें कुछ बड़ा होता है और उसकी गरदनके ऊपरी भागोंपर स्पष्ट दिखाई देनेवाला कालासा धब्बा होता है। यह ख़रगोश उत्तरमें खानदेश-विदर्भसे लेकर नीचे दक्षिण हिंदुस्तानमें पाया जाता है। इन दोनोंसे आकारमें कुछ छोटी एक तीसरी रेगिस्तानी ख़रगोशकी जाति है जो राजस्थान तथा पंजाबके रेतीले प्रदेशोंमें पाई जाती है। इस जातिके ख़रगोशका रंग हलका पीला या बालूसा-भूरा होता है।

खेतीकी ज़मीनके आसपास जहाँ झुरमुट या खुले जंगलोंके बड़े हिस्से होते हैं, वहाँ बहुतसे ख़रगोश पाये जाते हैं। ये निशा-चर प्राणी हैं; फिरभी बादलोंसे घिरी सर्द हवामें ये दिनमेंभी चरते नज़र आते हैं। सामान्यतया वे दिनमें घासभरी जगहके छोटेसे गढ़ोंमें निश्चल पड़े हुए या सोये हुए रहते हैं और बिना ठोकर खाये हमें उनका पताभी नहीं लग पाता। धोखेकी सूचना मिलतेही वे उछलते कूदते हुए भाग निकलते हैं; पर कुछ दूर जानेपर अपने पिछले पैरोंपर खड़े होकर आसपास निहारनेके लिए ठहरते हैं। सफ़ेद खरगोशकी तरह ये ख़रगोश ज़मीनमें बिल नहीं बनाते। इनके बच्चे जन्मसेही चपल होते हैं और उनके शरीरपर घने रोएँ होते हैं। संकटोंसे बचनेका साधन है इनके दौड़नेकी गति और अतीव सावधानता। बहुतसे मांसभोजी पशु-पक्षी तथा साँप इन्हें मारकर खाते हैं।
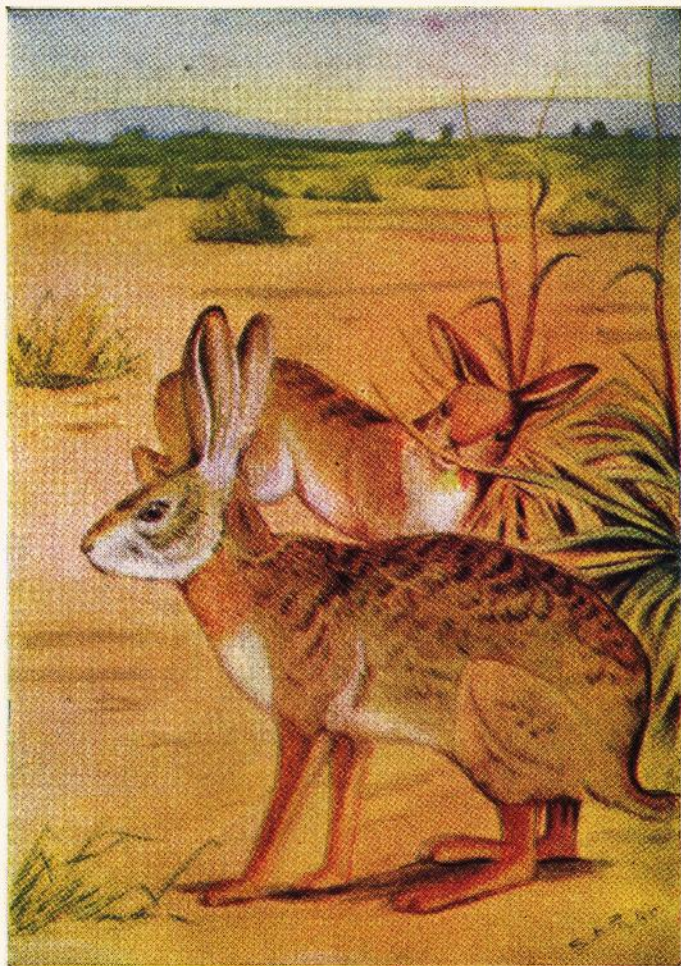
सामान्य ख़रगोश

गौर (नर)

गौर दुनियाके वन्य ढोरोंमें सबसे बड़ा और भव्य प्राणी है। गौर-बैल बल और सामर्थ्यका प्रतीक है। भरा-पूरा हृष्टपुष्ट शरीर और सींग तथा कंधोंसे लेकर पीठके मध्यतक फैला हुआ मांसल भागवाला गौर-बैल आकार और वजनमें भारी होते हुएभी खूब तेजीसे चल सकता है और पहाड़ीकी सीधी चढ़ाईपर आसानी और तेजीसे चढभी सकता है। गौर-बैलकी ऊँचाई कंधेके पास छह फुट चार इंचतक होती है। गायका शरीर कम स्थूल होता है और ऊँचाईभी ४-६ इंच कम होती है। बूढ़े बैलोंका रंग गहरा काला होता है और शरीरपर रोएँभी बहुत कम होते हैं। किन्तु जवान बैलों तथा गायोंका रंग सुर्ख चाकलेटी होता है।

हिंदुस्तानके सभी पहाड़ी भागोंके जंगलोंमें गौर पाये जाते हैं, किन्तु दक्षिण हिंदुस्तान तथा आसाम उनका असली निवासस्थान है। प्रायः सवेरे तथा शामको वे जंगलोंके खुले भागोंमें चरनेके लिये निकलते हैं। गौरकी गन्धशक्ति बहुत तेज़ होती है; किंतु दृष्टि तथा श्रवणशक्ति बहुत कम होती है। पवनकी अनुकूलतासे तो चार सौ गज़ दूरी परसेभी उसे मनुष्यका अस्तित्व जान पड़ सकता है। अन्यथा तीस गज़ दूर परके आदमीकाभी उसे पता नहीं लगता। सामान्यतया गौर ८ से १२ जानवरोंके कुटुम्बसमूहहीमें संचार करते हैं। इनमें कुछ बैलभी होते हैं। किन्तु समूहका नेतृत्व तथा बछड़ोंका भरणपोषण गायेंही करती हैं। संवेशन कालमें प्रमुख गौर-बैल अपने समूहमें दूसरे जवान बैलोंको रहने नहीं देता। नवजात बछड़ा जबतक गायके साथ या समूहके साथ घूमने लायक बड़ा नहीं होता तबतक जंगलके एकांत भागोंमेंही रखा जाता है।

कृष्णसार दुनियाका सबसे सुडौल कुरंगहिरन है। दुनियाके सबसे अधिक तेज दौड़नेवाले जानवरोंमेंसे यह एक है-यहाँतक कि एक मिनटमें वह एक मीलकी रफ़्तारसे बहुतसा फासला तय कर सकता है। कृष्णसार-नरकी ऊँचाई कंधेके पास ३२ इंच होती है। केवल नरकेही ३० इंच लम्बे सुंदर पेंचदार सींग होते हैं। नरको उम्रके तीसरे वर्षमें काला रंग प्राप्त होता है। इससे कम अवस्थावाले नर मादाहीकी तरह पीले-भूरे रंगके होते हैं। पेट तथा पैरोंके भीतरी हिस्सोंका रंग सफ़ेद होता है। कृष्णसारके बड़े बड़े झुण्ड देहाती प्रदेशोंमें तथा खेतीबाड़ीकी ज़मीनवाले विस्तीर्ण सपाट खुले मैदानोंमें पाये जाते हैं। लगभग तीस साल पहलेतक कृष्णसार हिंदुस्तानभरमें विपुलतासे पाये जाते थे। किन्तु आज मनुष्यद्वारा किये गये अंधाधुंध क़त्लके कारण अब कई प्रदेशोंमें वे ढूंढे नहीं मिलते। ये प्राणी रातभर और दोपहरीतक तथा फिर शामको चरते रहते हैं। खुले मैदानोंके निवासी होनेके कारण संकटोंसे बचनेके प्रमुख साधन हैं इनकी तेज़ गति और तीक्ष्ण दृष्टि; इसकी गन्धशक्ति तथा श्रवणशक्तिभी काफ़ी विकसित होती हैं। आँखोंके नीचेकी ओर कुछ फूली हुईसी गन्ध-ग्रंथियाँ इनकी एक विशेषता है। ऐसीही ग्रंथियाँ जांघोंके भागोंमें तथा खुरोंके बीचभी रहती हैं। झुण्डका नेतृत्व प्राय: बड़ी उम्रवाली और सदा सावधान रहनेवाली हिरनीही करती है। झुण्डमें प्रमुख रूपसे हिरनियाँ, बछड़े तथा कुछ कम उम्रवाले नर और वयप्राप्त नरभी होते हैं। सालभर इनके बच्चे पैदा होते रहते हैं; फिरभी प्राय: फरवरीसे लेकर अप्रैलतक हिरनियोंको पानेके लिये झगड़नेवाले नर दिखाई देते हैं।

कृष्णसार (नर)

चीतळ (नर)

चीतल दुनियाका अत्यंत सुंदर सारंगहिरनोंमेंसे एक है। इसका रंग चमकदार लाल-भूरा होता है और उसपर सफ़ेद चित्तियाँ होती हैं। पूर्णतया विकसित शरीरवाला नर कंधेतक ३६ इंच ऊँचा हो सकता है। सिर्फ़ नरकेही सुडौल शानदार शाखावाले लगभग ३६ इंच लम्बे सींग होते हैं। हमारे देशमें सर्वत्र विपुल पानी और चरागाहोंवाले जंगलोंमें चीतल पाये जाते हैं और कई बार जंगलोंके आसपासके गाँवोंके खेतोंमेंभी प्रवेश करते हैं। किन्तु दलदलवाले घने जंगलोंको वे अक्सर टालते हैं। सवेरेके समय वे बड़ी देरतक चरते रहते है और दोपहरीमेंभी बहुत जल्द चरना शुरू कर देते हैं। वनस्पतिभोजी होनेके कारण ये घास तथा झुरमुटोंकी असीम वृद्धिको रोक सकते हैं। ये स्वयंभी बिलाव जातिके बाघ, बघेरा आदि बड़े प्राणियोंके प्रिय खाद्य हैं। इनकी आँखें, श्रवणेंद्रिय तथा गन्धशक्ति बहुतही तेज़ होती है। अतीव सावधानता तथा झुण्डोंमें साथ रहनेकी आदतके कारणही संकटोंसे इनकी रक्षा हो पाती है। इनकी हरेक आँखके नीचे तथा पिछले पैरोंके खुरोंमें गन्धयुक्त द्रवकी ग्रंथियाँ होती हैं। इनमेंसे निकलनेवाले द्रवके गंधके कारण झुण्डके हिरनोंको एकत्र रहनेमें और संवेशन कालमें हिरनियोंको नरोंकी ओर आकर्षित करनेमें मदद मिलती है। वैसे तो सालभर इनके छोटे-बड़े झुण्डोंमें हमेशा कई नर पाये जाते हैं। किन्तु संवेशन कालमें हिरनियोंको पानेके लिये नर आपसमें झगडते हुए नज़र आते हैं। हरसाल संवेशन कालके बाद इनके सींग झड़ जाते हैं और दो-तीन महीनोंके बाद फिर नये सींग निकल आते हैं। सींगोंकी पूरी वृद्धि होनेतक उनपर मखमल जैसा आवरण रहता है।

हिन्दी नाम	अंग्रेज़ी नाम
१ उत्तरी बंदर	रीसस् मंकी Rhesus monkey (मॅकाका म्युलाट्टा) (Macaca mullatea)
२ सिंह	लायन् Lion (पँथेरा लिओ) (Panthera leo persica)
३ बाघ	टायगर् Tiger (पँथेरा टिग्रिस्) (Panthera tigris)
४ सियार	जॅकॉल् Jackal (कॅनिस् ऑरिअस्) (canis aureus)
५ सामान्य ख़रगोश	कॉमन् हेअर् Common hare (लेपुस् निग्रिकॉलिस्) (Lepus nigricollis)
६ गौर	गॉर Gaur (बॉस् गॉरस) (Bos gaurus)
७ कृष्णसार	ब्लॅक् बक् Blackbuck (ॲन्टिलोप् सर्विकाप्रा) (Antelope cervicapra)
८ चीतल	चितळ या स्पॉटेड् डिअर् chital (ॲक्सिस् ॲक्सिस्) (Axis axis)

मराठी नाम	गुजराती नाम
१ उत्तरी माकड	उत्तरी मांकडुं
२ सिंह	सिंह
३ वाघ	वाघ
४ कोल्हा	शियाळ
५ सामान्य ससा	सामान्य ससलुं
६ गवा	गोर
७ काळवीट	काळियार
८ चितळ	चीतळ

छायाचित्र निम्नलिखित व्यक्तियोंके सौजन्यसे

बीकानेरके नरेश—कृष्णसार (आवरण - मुखपृष्ठ)

श्री. इ. पी. जी—बारहसींगा (सारंगहिरन) (आवरण - अन्तिमपृष्ठ)

बॉम्बे नॅचरल् हिस्टरी सोसायटीद्वारा पिछले कई सालोंसे महाराष्ट्र सरकारकी आर्थिक सहायतासे बम्बई शहर और महाराष्ट्र राज्यके बालकोंके लिए निसर्ग-अभ्यास योजना जारी है।

इस योजनाके अनुसार बालकोंके और शिक्षकोंके लिए लिखी गई सचित्र पुस्तकमालाका यह पाँचवा पुष्प है। पुस्तिकाका मूल्य अल्प है, और आशा है, कि इस मालासे प्रकृति - जीवन अभ्यासके प्रति हमारी दिलचस्पी बढ़ती रहेगी।

यह पुस्तिका हिन्दी, मराठी, गुजराती और अंग्रेज़ी भाषाओंमें प्रकाशित हुई है।

प्रकृति-जीवन अभ्यासके किसीभी विषयके बारेमें अधिक जानकारीके लिए निम्नलिखित पतेपर लिखिये।

निसर्ग-अभ्यास नियोजक,
बॉम्बे नॅचरल् हिस्टरी सोसायटी,
९१, वालकेश्वर रास्ता,
बम्बई ६

वागळे प्रोसेस स्टुडीओ ॲन्ड प्रेस प्राईव्हेट लिमिटेड, बम्बई (इंडिया) में मुद्रित।